वर्णमाला में पंचम वर्ग के केवल पहले अक्षर 'प' से आरम्भ होने वाले शब्द ही इस भाग में हैं क्योंकि वे अधिक हैं । शेष चार अक्षरोंके शब्दों के लिये अगला भाग देखें ।

758. पॅवरि : डयोढ़ी । घर के द्वार पर , नीचे बनी पतली से मुडेर।
759. पॅवरिया : शुभ अवसर पर द्वार पर बैठ कर मंगल गीत गाने वाले ।

760. पकना : भोजन का ऑच पर गलना और तैयार होना । सौदा पटाना । सींझना । रींधना । चुरना ।
761. पकड़ना : ग्रहण करना । थामना । अपने हाथों में ले लेना ।

762. पक्का : पका हुआ फल या अन्न जो पुष्ट हो कर खाने योग्य हो गया हो । अनुभव प्राप्त । निपुण । निश्चित । प्रामाणिक । पक्व ।
763. पगना : रस के साथ पक कर मिल जाना । मग्न होना । प्रेम में डूबना ।

764. पगा : डुपट्टा ।
765. पगार : पैर में लगी हुई मिट्टी ।
766. पगारना : फैलाना ।

767. पचना : खाने के बाद भोजन का पेट में रसों के साथ मिल कर परिणत या हजम होना । समाप्त होना । दूसरे रूप में बदलना । पराये माल को अपना कर लेना ।

768. पछाया : किसी वस्तु का पिछला भाग ।

769. पछारना : कपड़े को पटक पटक कर धोना।

770. पंचकोशी : पॉच कोस की लम्बाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी नगरी ।

771. पंचगंगा : गंगा, यमुना, सरस्वती , किरणा, धूतपापा नदियों का समूह ।

772. पंचगव्य : गाय से सम्बधित पॉच द्रव्य दुध , दही, घी, गोबर और गौमूत्र ।

773. पंचतत्व : पृथ्वी , जल, वायु, आकाश और तेज नामक पंचभूत

774. पंचप्राण : शरीर में स्थित पॉच प्रकार की प्राण वायु ।

a) प्राणवायु : जो नाक से हो कर फेफड़ों से रक्त में जाती है और जिसका संचालन हृदय से होता है ।

b) समान वायु : जो पाचन क्रिया में सहायक होती है, और भोजन से प्राप्त शक्ति को पूरे शरीर में बॉटती है ।

c) उदानवायु: जो दिमाग, गले, चेहरे के अंगों आदि में प्राण शक्ति का संचार करती है ।

d) व्यान वायु : जो प्राण वायु की शक्ति को पूरे शरीर में पहुॅचाती है ।

e) अपान वायु : जो शरीर से मल को बाहर निकालने वाली वायु है ।

775. पंचबाण : कामदेव के पॉच बाण जिनके उपयोग से वे जीवों में प्रेम कह भावना जगाते हैं ।

776. पंचसन्धि : व्याकरण में सन्धि के पॉच भेद ।

777. पट : वस्त्र, कपड़ा । चित्र बनाने का कागज या कपड़ा । छान , छप्पर , आड़ , परदा । किवाड़ , चपटी चौरस भूमि । लेटने की ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि की ओर हो और पीठ आकाश की ओर । तुरंत । शीघ्र ।

778. पटल : तिलक, टीका । पुस्तक का एक भाग । परिछेद । समूह । पटरा । आवरण । परत ।

779. पतर : पतला । पत्ता । पत्तल ।

780. पतला : झीना । हल्का । अधिक तरल ।

781. पतली : जुआ । घूत ।

782. पता : किसी व्यक्ति या वस्तु के स्थान को बताने वाला निदेश । डाक पत्र के लिफाफे पर लिखे हुये सूचनार्थक शब्द । अनुसन्धान । रहस्य ।

783. पत्ता : वनस्पति पर उगने वाले हरे रंग के हिस्से जिन से पौधे या वृक्ष धूप की ऊर्जा सोकते हैं और जिन के कारण वे हरे दिखाई देते हैं । ये मौसम के अनुसार उगते व झड़ते हैं ।

784. पताई : सूख कर झड़ी हुई पत्तियॉ । पतावर ।

785. पताका : ध्वजा । झंडा ।

786. पत्थर : पृथ्वी तल का कड़ा खण्ड । रत्न । ओला । पत्थर की तरह कठोर तथा भारी वस्तु ।

787. पथ : मार्ग । विधान । व्यवहार । पन्थ ।

788. पथिक : मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति । यात्री ।

789. पग : चलते समय पैरों का एक के बाद एक आगे बढ़ते समय, दोनों पैरों के बीच की दूरी ।

790. पद : पैर । कविता में शब्दों का एक समूह जो कुछ पंक्तियों का होता है । प्रदेश या जनपद । व्यवसाय में नियुक्ति का पद।

स्थान । चिह्न । मोक्ष । गीत या भजन । किसी छन्द का चौथा भाग ।

791. पदावली : भजनों का संग्रह । वाक्यों की श्रेणी ।

792. पदग : पैदल चलने वाला ।

793. पदज : पैर की अँगुली ।

794. पद्माकर : जलाशय । तालाब।

795. पदार्थ : धर्म । सत्व । वस्तु ।

796. पदार्पण : माननीय व्यक्ति की, किसी स्थान पर प्रथम बार पैर रखने की क्रिया ।

797. पदन्यास : माननीय व्यक्ति का किसी अमुक स्थान से गमन, जहाँ वे कुछ दिनों के लिये ठहरे थे ।

798. पनस : कटहल । पनच : धनुष की डोरी ।

799. पनचोरा : वह पात्र जिसका मुँह और पेंदी दोनों बराबर हों ।

800. पन्ना : कच्चे आम या इमली से बनाया हुआ एक प्रकार का ठंडा पेय जो गर्मी में पिया जाता है ताकि गर्म हवा के कारण बुखार आदि न हो । हरे रंग का अनमोल रत्न । मरकत मणि ।

801. पर : श्रेष्ठ । अन्य । दूसरा ।

802. परख : परीक्षा । जाँच ।

803. परग : पग । डग ।

804. परम : अत्यन्त, मुख्य , प्रधान ।

805. परसों : पिछले दिन से पहले का दिन और अगले दिन के बाद का दिन ।

806. बरसों : कई वर्ष का ।

807. पराकाष्ठा : चरम । सीमा । हद । परिणाम : फल । रूपान्तर की प्राप्ति । प्रौढ़ता । पूर्णता । विकार । प्रकृति का अन्यथा भाव । परिमाण : नाप । तोल ।

808. परिवार : सभी रिश्तेदार । कुटुम्ब । परिजन समूह ।

809. परिहार : परिवाद , निन्दा । अनादर । उपेक्षा । तिरस्कार । छूट । खण्डन । दोषादि का त्याग ।

810. पल : समय का एक विभाग जो चौबीस सैकण्ड के बराबर होता है । घटी का साठवॉ भाग । एक घटी चौबीस मिनट की होती है ।

811. पलक : ऑख की सुरक्षा के लिये खोलने और बन्द करने के हिस्से के आगे के बाल ।

812. पल्ला : किसी वस्त्र का आंचल । दूरी । पास । तराजू का पलड़ा । किवाड़ । पहल । चादर जिसमें अन्न बॉध कर ले जाते हैं ।

813. पलटा : प्रतिफल । परिवर्तन । बदलना । फेरना । लौटाना।

814. पवन : वायु । पवित्र ।

815. पावन । शुद्ध । स्वच्छ ।

816. पवित्रा : श्रावण माह के शुक्लपक्ष की एकादशी ।

817. पवित्री : घास का बना हुआ छल्ला जो यज्ञ के समय अनामिका में पहना जाता है ।

818. पश्चिम : अन्तिम । जो बाद में उत्पन्न हुआ हो । जिस दिशा में सूर्यास्त होता है ।

819. पश्मीना : एक प्रकार का श्रेष्ठ उूनी वस्त्र ।

820. पहर : तीन घंटे का समय ।

821. पहरा : रखवाली । सुरक्षा ।
822. पहरी : रखवाली करने वाले । रक्षकगण । पहरेदार ।

823. पहल : समतल अंश । परत । तह ।
824. पहला : जो क्रम में सब से पहला हो । प्रथम । शून्य के बाद एक ।
825. पहले : आरम्भ से । पूर्व काल में । पहिले ।

826. पहुँच : किसी स्थान तक की गति । प्राप्ति । प्रवेश ।
827. पहुँचा : अग्र बाहु और हथेली के बीच का भाग । कलाई । मणिबन्ध ।
828. पॉच : चार और एक की गिनती ।
829. पॉचालिका : कपड़े की बनी हुई गुड़िया ।

830. पाख : पखवाड़ा । एक माह का आधा भाग ।
831. पाखर : टाट की बनी हुई बड़ी चादर जिसको बैलगाड़ी में रखकर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है ।
832. पाखा : कोना । छोर ।

833. पाटला : एक प्रकार का अति शुद्ध किया हुआ बढ़िया सोना, जो केवल भारत में बनता है ।
834. पाटी : लकड़ी की पट्टी जिस पर बालकों को लिखने का अभ्यास कराया जाता है । तख़्ती ।

835. पाठ : किसी पुस्तक का एक अंश जो एक बार में पढ़ाया जाता है । शिष्य का अध्यापन । पढ़ने की क्रिया । किसी धर्म पुस्तक को नियमपूर्वक पढ़ने की क्रिया ।

836. पाठक : उपाध्याय । पढ़ाने वाला । धर्मोपदेशक । अध्यापक।

837. पाठिका : पाठ पढ़ाने वाली ।

838. पाठार्थी : पाठ पढ़ने वाला या वाली । पाठी ।

839. पााठय : पढ़ने योग्य ।

840. पाड़ : धोती या साड़ी का किनारा ।

841. पात : खगोल का वह स्थान जहॉ नक्षत्रों की कक्षाएँ कान्तिवृत को काट कर ऊपर की ओर या नीचे की ओर जाती दिखाई देती हैं ।

842. पाता : पत्ता । रक्षक । पति ।

843. पातव्य : रक्षा करने योग्य ।

844. पाताल : पृथ्वी के नीचे का सातवॉ लोक ।

845. पाति : मान । प्रतिष्ठा ।

846. पात्र : अनेक गुणों से सम्पन्न । नाटक का अभिनेता या नायक या नायिका ।

847. पात्रता : योग्यता ।

848. पात्री : जिसके पास सुयोग्यता हों ।

849. पाथेयः यात्री के साथ बॉधा गया, रास्ते के लिये नाश्ता या खाना ।

850. पाथना : किसी गीली वस्तु को सॉचे में रखना । गाढ़ना । ठोकना । पीटना ।

851. पान : पान के पत्ते के आकार की कोई वस्तु । ताश के पत्तों में, चार भेदों में से एक । एक विशेष प्रकार का पत्ता जिसमें भिगोया हुआ गीला चूना व कत्था लगा कर कटी हुई सुपारी डाल कर, भोजन के बाद या निरे मुख, देर तक चबा कर खाया जाता है ।

852. पाना : प्राप्त करना । पास पहुँचना । समर्थ होना । जानना । देखना । अनुभव करना । अच्छा या बुरा परिणाम भोगना ।

853. पानी : पेय जल । वृष्टि , वर्षा , मेघ , जलवायु । कोई द्रव्य पदार्थ । शास्त्रा की श्रेष्ठता । चमक । छवि ।

854. पानीय : जो दिया जा सके । पाने योग्य ।

855. पाप : अधम । बुरा कार्य । दुष्कृत । अहित । बुराई ।

856. पापड़ : उर्द या मूँग दाल के आटे से बनी मसालेदार महीन पापड़ी जो कच्चे रूप में कई महीनों तक रखी जा सकती है । खाने के लिये इसे हल्की ऑच पर भूनना होता है या तलना पड़ता है ।

857. पायक : पाने वाला ।

858. पायल : पायजेब । नूपुर ।

859. पार : प्रान्त , भाग , छोर , अन्त, दूर । नदी के दुसरे किनारे तक ।

860. पारग : पार जाने वाला । अभिज्ञ ।

861. पारगत : पूरा जानकार ।

862. पारणाः उपवास व्रत के बाद के दूसरे दिन का पहला भोजन।

863. पारावार : आरपार । वारपार , सीमा, हद । पारदर्शी : खिड़के के शीशे जैसा, आरपार देख पाने का ठोस माध्यम ।

864. पारदर्शक : दूरदर्शी , विद्वान । चतुर । पारस : एक कल्पित स्पर्श मणि , जिस के बारे में मान्यता है कि लोहा छुआने वह मणि उसे सोने में बदल देती है । कोई भी अत्यन्त लाभ देने वाली तथा उपयोगी वस्तु ।

865. पारा : चॉदी की तरह श्वेत, चमकीली और तरल धातु , जिसका उपयोग थरमामीटर बनाने में होता है । केवल पारा ही एकमात्र तरल धातु है ।

866. पारितोषिक : भेंट । उपहार ।

867. पाहुरः वह वस्तु जो किसी को प्रसन्न करने के लिये दी जाय

868. पारिभाषिकः विश्लेषण द्वारा या परिभाषा द्वारा अर्थ स्पष्ट करना ।

869. पार्थ : पृथ्वी पति । अर्जुन का एक नाम ।

870. पार्थक्य :वियोग । अलग या पृथक् होने का भाव ।

871. पालक : रक्षा करने वाला । भरण पोषण अनुकूल व्यवहार करने वाला । एक प्रकार की चौड़ी और बड़ी पत्तियों वाला साग जो सर्दीयों में उगता और खाया जाता है । पाला हुआ पुत्र ।

872. पाला : वायु में उपस्थित भाप जब ठंडी हो कर जम जाती है और सर्दीयों में सवेरे के समय सफेद धुऍ की तरह दिखाई देती है, तब वह पाला कहलाती है ।

873. पाव : एक सेर का चौथाई भाग । चार छटॉक का परिमाण ।

874. पावक : शुद्ध या पवित्र करने वाला ।

875. पावन : शुद्ध । पवित्र । शुद्धता । पवित्रता ।

876. पावस : वर्षाकाल । बरसात के तीन माह ।

877. पाश : रस्सी। फन्दा । डोरी । जाल । पासिका । पाशव : पशु सम्बन्धी कोई बात या कार्य ।

878. पास : निकट । समीप ।

879. पासा : एक छोटा पत्थर का छःपहल , यानि छः तरफ वाला , जिसके हर पहल में एक से छः तक की संख्या की काली बिन्दीयॉ बनी होती हैं । यह चौसर का खेल खेलने के लिये होता है ।

880. पाहि : संस्कृत का एक पद 'पाहि माम, पाहि माम', जिसका अर्थ है 'रक्षा करो, रक्षा करो '।

881. पाही : वह खेती जिसका किसान दूसरे गॉव में रहता हो।

882. पिघलाना । किसी घने या ठोस पदार्थ को आग पर गला कर, द्रव्य रूप में लाना ।

883. पिचपिचाना : घावों में से थोड़ा थोड़ा पीप का रिसना ।

884. पिचपिचाहट : गीले या आद्र रहने का भाव । पहिने हुये कपड़े गीले हो जाने की स्थिति में कपड़ों का शरीर से चिपकने का भाव ।

885. पिछौरा : पुरुषों के ओढ़ने की चादर ।

886. पिछौरी : स्त्रीयों की चादर जिसे वे धोती के ऊपर ओढ़ती हैं।

887. पिनाक : शिवजी का धनुष जिसे श्रीरामचन्द्रजी ने जनकपुर में तोड़ा था ।

888. पिनाकी : पिनाक धनुष को धारण किये हुए शिव का नाम।

889. पिनकना : बैठे बैठे नींद में आगे को झुकना ।

890. पिन्नी : आटे या अन्य अन्न के चूर्ण में गुड़ या चीनी मिला कर बनाई गई मिठाई ।

891. पिलपिला : किसी फल का इतना नर्म होना कि जरा दबाने पर रस या गूदा बाहर आ जाए ।

892. पिष्टपेषण : पिसे पदार्थ को बार बार पीसना । एक ही बात को बार बार दोहराना ।

893. पीठ : आसन । चौकी । किसी मूर्ति के नीचे रखने का आकार । शरीर के पिछले हिस्से का मध्य भाग जो गर्दन से आरंभ हो कर नीचे तक जाता है ।

894. पीढ़ा : लकड़ी की छोटी चौकी जिसके ऊपर का हिस्सा बान से बुना होता है ।

895. पीढ़ी : सन्तान । सन्तति । किसी वंश में विशेष व्यक्ति से आरम्भ कर के उसके ऊपर या नीचे के पुरुषों की क्रमवार गणना

896. पीड़ा : शरीर में रोग के कारण या किसी अंग पर चोट लगने के कारण होने वाली दर्द की भावना ।

897. पुकार : रक्षा या सहायता के लिए ऊँची आवाज़ में बुलाना । गुहार । किसी वस्तु को मॉगने के लिये चिल्लाना । अभियोग ।

898. पुखर : तालाब । पुष्कर ।

899. पुखता : दृढ़ ।

900. पुचकार : बच्चे के गाल या माथे पर हल्के से चूमना या अँगुलीयों से थपथपाना ।

901. पुण्ड : माथे पर लगाने का तिलक ।
902. पुण्डरीक : सफेद कमल ।
903. पुण्यःधर्म का कार्य। शुभ कार्य । धर्म विदित। शुभ, पवित्र ।
904. पुण्यदर्शन : जिसके दर्शन करने से शुभ फल मिले ।
905. पुण्यवान : धर्मात्मा । पुण्य करने वाला । पुण्य शील ।

906. पुनः दोबारा । दूसरी बार । फिर से ।
907. पुनः पुनः :बारम्बार। अनन्तर।
908. पुनना : बुरा भला कहना ।

909. पुनरपि : फिर से । उपरान्त । पीछे ।
910. पुनि : फिर से ।
911. पुनी : पूर्णिमा । पुण्यात्मा । धर्मात्मा ।
912. पुर : नगर, घर, गृह, दुर्ग, गढ, समूह, देह, शरीर, पूर्ण, भरा हुआ ।

913. पुरवा : पुरवाई । पुरवैया । पूर्व दिशा से चलने वाली हवा जो भारत व उसके पड़ोसी देशों में वर्ष में एक बार, लगातार तीन माह तक बरसात लाती है । मिट्टी का कुल्हड़ ।

914. पुष्कल : एक प्रकार का ढोल ।
915. पुष्कर : पोखर । ताल । आकाश । ढोल, मृदंग आदि वाद्यों का मुखड़ा जिस पर ढाप दे कर वाद्य बजाया जाता है ।

916. पुष्प : फूल ।

917. पुष्ट : बलिष्ठ । शारीरिक बल एवं दृढ़ बनावट ।

918. पुष्टि : पोषण , दृढ़ता , वृद्धि ।

919. पुस्तक :एक विषय पर कई पाठों का समयिक संग्रह। किताब।

920. पुस्तिका : छोटी पोथी । छोटी पुस्तक ।

921. पूँजी : मूल धन । रूपया , पैसा, धन, सम्पत्ति । कार्यालय की अचल सम्पत्ति ।

922. पूजन :पूजा, अर्चना, देवता की वन्दना। आराधना । मान्यता । आदर सत्कार ।

923. पूर : मसाले आदि जो पकवानों में भरे जाते हैं ।

924. पूरक : प्राणायाम की वह क्रिया जिसमें नाक के एक छिद्रको बन्द करके दूसरे छिद्र द्वारा सॉस ऊपर खींची जाती है । वह संख्या जिसमें किसी संख्या का गुणा किया जाए ।

925. पूरना : पूर्ति करना। पूर्ण होना या व्याप्त होना । मनोरथ सिद्ध करना । मंगल अवसरों पर, घर के ऑगन में या चौखट के आसपास, आटे व अबीर से रेखा चित्र बनाना ।

926. पूर्ण : परिपूर्ण, पूरी तरह भरा हुआ । समूचा । पूरा । सफल । सिद्ध । परितृप्त । समाप्त ।

927. पूर्णतया : पूर्ण रूप से । पूर्णविराम : लिखने में वह चिन्ह जो वाक्य के पूरा होने के बाद लगाया जाता है । देवनागरी लिपि में इस के लिये खड़ी हुई पाई '।' का प्रयोग किया जाता है ।

928. पूर्वक : साथ । सहित । अर्थ में प्रायः संयुक्त संज्ञा के अन्त में प्रयोग होता है । जैसे कि, ध्यानपूर्वक ।

929. पूर्वभाषी : पहिले बोलने वाला ।

930. पूर्वरात्र : रात्रि का पहला भाग ।

931. पृष्ठ : शरीर के पीछे का भाग । पीठ ।
932. पीछा या पिछला : पुस्तक का एक पन्ना । पुस्तक के एक पन्ने का एक ओर का तल ।
933. पृष्ठफल : किसी पिण्ठ के ऊपरी भाग का श्रेत्रफल ।
934. पृष्ठ भाग : पिछला हिस्सा । पीठ ।
935. पृष्ठवंश : पीठ की रीढ़ की हड्डी ।

936. पेखना : देखना ।
937. पेचना : किन्ही दो वस्तुओं के बीच में तीसरी वस्तु को इस प्रकार जमा देना कि पता ही न चले ।

938. पेटा : सीमा । पूरा विवरण । वृत । घेरा । किसी पदार्थ का मध्य भाग । नदी के बहने का मार्ग । नदी का पाट ।
939. पेट : शरीर का वह भीतरी हिस्सा जहॉ खाया हुआ भोजन पहुॅचता है और पचता है । चक्की का भीतरी भाग । जीविका । उदर ।

940. पेड़ : वृक्ष । पादप ।
941. पेड़ा : खोवे की बनी हुई, छोटे व चपटे गोलाकार की मिठाई।

942. पै : प्रति , ओर । निकट । समीप । परन्तु । पर । अनन्तर । पीछे । अधिकरण सूचक । विभक्ति पर । ऊपर करण सूचक ।

943. पैदल : पॉव पॉव आगे बढ़ना या चलना, बिना किसी सवारी के। पदाति ।

944. पौरा : मिट्टी में बने पॉव के चिन्ह ।

945. पौरी : ड्योड़ी , खड़ाऊ । सीड़ी ।

946. प्रकल्पित : निश्चित करना ।

947. प्रकल्पित : निश्चित किया हुआ ।

948. प्रकर्ता : अच्छी तरह से कार्य करने वाला ।

949. प्रकर्तव्य : अवश्य करने योग्य ।

950. प्रकार : समानता । भेद । भॉति । तरह । घेरा । परकोटा ।

951. प्रकाश : ज्योति । धूप । स्पष्ट रूप में समझ में आ जाना । प्रसिद्धि ।

952. प्रचुर : अनेक , बहुत । अधिक ।

953. प्रचार : सब को बताना । प्रचार करना ।

954. प्रज्ञ : विद्वान । पण्डित ।

955. प्रज्ञा : ज्ञान बुद्धि ।

956. प्रण : किसी काम के करने के लिये लिया हुआ अटल निश्चय । प्रतिज्ञा ।

957. प्रणव : ओंकार । परमात्मा ।
958. प्रणय : प्रीतियुक्त प्रार्थना ।
959. प्रणयी : प्रेम करने वाला पति ।
960. प्रणता : रचयिता । बनाने वाला ।
961. प्रणीत : बनाया हुआ ।
962. प्रति : एक उपसर्ग (suffix) है जो शब्द के आरम्भ में लगता है और निम्नलिखित अर्थ के शब्द बनाता है, जैसे कि ,
963. प्रतिनिधि : प्रतिकाय, यानि प्रतिमा, प्रतिरूप । प्रतिकृति, यानि प्रतिबिम्ब ।
964. प्रतिकूल : विपरीत । विरुद्ध ।
965. प्रतिपक्षी : प्रतिकूल आचरण । प्रतियोद्धा ।
966. प्रतियोग, यानि विरुद्ध पदार्थो का संयोग ।
967. प्रतिकृत यानि, जिसका बदला पूरा हो चुका हो ।

968. प्रत्येक : प्रतिभाग, यानि हर एक हिस्सा ।
969. प्रतिपदा : कृष्ण या शुक्ल पक्ष की पहली तिथि। प्रतिमास यानि हर महीने ।

दुबारा अर्थ के शब्द :

970. प्रतिचिन्तन यानि पुनःविचान ।
971. प्रतिध्वनि यानि गूँज। बोलने के तुरन्त बाद दुबारा सुनाई दी जाने वाली ध्वनि । यह घाटियों में विशेषकर सुनाई देती है ।

विरोध अर्थ के शब्द :

972. प्रतिघाती । विरोध करने वाला । युद्ध में टक्कर लेने वाला ।
973. प्रतिशोध बदला ।
974. प्रतिदान : विनिमय । बदला हुआ ।
975. प्रतिदत्त : लौटाया हुआ ।

976. प्रतिद्वन्दी यानि बराबर का लड़नेवाला ।

977. प्रतिनिर्देश : जिसका उल्लेख पहले किया गया हो ।

978. प्रतिवासी : पड़ोसी ।
979. प्रतिवेश्म : पड़ोस का मकान ।
980. प्रतिज्ञा : कोई कार्य करने के लिये दृढ़ निश्चिय ।
981. प्रतिपन्न :जाना हुआ, सुनिश्चित ।
982. प्रतिभामुखी : प्रभावशाली, प्रतिभासम्पन्न ।

983. प्रतिवाद : किसी वाक्य या सिद्धान्त को खण्डित करने के लिये कहा गया वाक्य ।
984. प्रतिवादी : वाद का उत्तर देने वाला ।
985. प्रतीक : चिन्ह । अवयव । अंश ।

986. प्रथम : प्रधान । मुख्य । पहिला । आगे आने वाला ।
987. प्रथमी : पृथ्वी ।

988. प्रदक्षिणा : परिक्रमा । मन्दिर में देवकक्ष को दाहिने ओर रखते हुये , उसके चारों ओर एक चक्कर लगाना ।
989. प्रदर्शनी : वह स्थान जहॉ भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तुएँ लोगों के देखने या खरीदने के लिये रखी जाती हैं ।

990. प्रबोध : यथार्थ जानकारी । तथ्य ।
991. प्रबोधित : जगाया हुआ । जो बुद्धि से जागृत है, जानकार है
992. प्रबुद्ध : पंणित । शिक्षित।
993. प्रभाषी : अच्छी तरह बोलने वाला ।

994. प्रभात : प्रातः काल । सूर्य उदय काल से एक घंटा पहले का समय ।
995. प्रभाव : तेज । प्रताप । सामर्थ्य । प्रभूत : प्रचुर । अधिक मात्रा में । बहुत ।
996. प्रमाण : सत्यता, सच्चाई , निश्चित किया हुआ ।
997. प्रमाणित : सच्चा ठहराया हुआ ।
998. प्रमाता : पिता की माता । दादी ।

999. प्रयाण : गमन । चढ़ाई । आरम्भ ।
1000. प्रयास : प्रयत्न । उद्योग । श्रम ।
1001. प्रयात : गया हुआ । सोया हुआ । मरा हुआ ।

1002. प्रयुक्त : प्रेरित ।
1003. प्रयुक्ति : प्रयोजन । प्रयोग ।
1004. प्रयुत : दस लाख की संख्या ।

1005. प्रलाप : व्यर्थ की बक बक ।
1006. प्रलेप : शरीर पर किसी औषधि का लेप ।

1007. प्रवचन : किसी वाक्य की व्याख्या ।
1008. प्रवदन : घोषणा ।

1009. प्रवाचक : अच्छा बोलने वाला ।
1010. प्रवादक : बाजा बजाने वाला ।
1011. प्रवाह : जल का बहाव या विस्तार ।
1012. प्रवाहक : अच्छी तरह बोलने वाला ।

1013. प्रशस्त : अति श्रेष्ठ । उत्तम ।
1014. प्रशस्ति : प्रशंसा । स्तुति ।
1015. प्रसक्त : संबद्ध ।
1016. प्रसाद : प्रसन्नता । स्वच्छता । कृपा । अनुग्रह । वह वस्तु या पदार्थ जो देवता या बड़े लोग अपने भक्तों या सेवकों को देते हैं।
1017. प्रसादी : नैवेद्य। देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ ।
1018. प्रसादनीय : प्रसन्न करने योग्य ।

1019. प्रस्तुत : उपयुक्त । योग्य । प्राप्त । उद्यत । तैयार ।
1020. प्रस्तुति : प्रस्तावना । प्रशंसा ।

1021. प्राण : श्वास । वायु । शक्ति । परम प्रिय व्यक्ति ।
1022. प्राणी : जीव , जन्तु, मनुष्य , जिस किसी में भी प्राण हों ।

1023. प्राप्ति : लाभ , आय । पहुँच । भाग्य । प्रवेश ।
1024. प्रार्थी : प्रार्थना करने वाला ।

1025. प्रीति : सन्तोष । प्रसन्नता । हर्ष । आन्नद । प्रेम । स्नेह ।
1026. प्रेक्षी : बुद्धिमान ।

1027. प्रेरणा : उत्तेजना । प्रवृत्ति। दबाव ।
1028. प्रोत्साहन : उत्साह बढ़ाने के लिये कुछ कहना या देना ।

1029. प्रोष्ण : अति उष्ण । बहुत गर्म ।
1030. प्रोढ़ोक्ति : गूढ़ रचना । किसी बाल को बढ़ा कर कहना ।

आगे अगले भाग में